تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

सुलगाते हो[106] और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۙ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ

और नहीं बना सकता[107] क्यूं नहीं[108] और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ

किसी चीज़ को चाहे[109] तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[110] तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع ٥

हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे[111]

اٰیاتها ١٨٢ | ٣٧ سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ ٥٦ | رکوعاتها ٥

सूरए صٰفّٰت मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ

क़सम उन की कि बा क़ाइ़दा सफ़ बांधें[2] फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं[3] फिर उन जमाअ़तों की कि कुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिक़ों का[4]

106 : अ़रब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख़ है दूसरे का अ़फ़ार। उन की ख़ासिय्यत येह है कि जब उन की सब्ज़ शाख़ें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपक्ता होता है, इस में क़ुदरत की कैसी अ़जीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस क़ादिरे मुत्लक़ की येह हिक्मत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द ज़िन्दगी वारिद करे तो उस की क़ुदरत से क्या अ़जीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे क़ुदरत देख कर जाहिलाना व मुआ़निदाना इन्कार करना है। **107 :** या उन्हीं को बा'दे मौत ज़िन्दा नहीं कर सकता ? **108 :** बेशक वोह इस पर क़ादिर है। **109 :** कि पैदा करे **110 :** या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ़ है। **111 :** आख़िरत में। **1 :** सूरए وَالصّٰفّٰت मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस हर्फ़ हैं। **2 :** इस आयत में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरोहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरोह हैं जो नमाज़ियों की तरह सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं या उ़लमाए दीन के गुरोह जो तहज्जुद और तमाम नमाज़ों में सफ़ें बांध कर मसरूफ़े इ़बादत रहते हैं या ग़ाज़ियों के गुरोह जो राहे ख़ुदा में सफ़ें बांध कर दुश्मनाने ह़क़ के मुक़ाबिल होते हैं। (مدارک) **3 :** पहली तक़्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुक़र्रर हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक़्दीर पर वोह उ़लमा जो वा'ज़ व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूरत में वोह ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। **4 :** या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और

www.dawateislami.net

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

बेशक हम ने नीचे के आस्मान[5] को तारों के सिंगार से आरास्ता किया और निगाह रखने को हर शैतान

مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ﴿۸﴾

सरकश से[6] आ़लमे बाला की त़रफ़ कान नहीं लगा सकते[7] और उन पर हर त़रफ़ से मार फेंक होती है[8]

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ

उन्हें भगाने को और उन के लिये[9] हमेशा का अ़ज़ाब मगर जो एकआध बार उचक ले चला[10] तो रोशन अंगारा

ثَاقِبٌ ؕ﴿۱۰﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ

उस के पीछे लगा[11] तो उन से पूछो[12] क्या उन की पैदाइश ज़ियादा मज़बूत है या हमारी और मख़्लूक़ आस्मानों और फ़िरिश्तों वग़ैरा की[13] बेशक हम ने उन को

طِيْنٍ لَّازِبٍ ؕ﴿۱۱﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۖ﴿۱۲﴾ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۖ﴿۱۳﴾

चिपक्ती मिट्टी से बनाया[14] बल्कि तुम्हें अचम्बा आया[15] और वोह हंसी करते हैं[16] और समझाए नहीं समझते

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۖ﴿۱۴﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ﴿۱۵﴾

और जब कोई निशानी देखते हैं[17] ठट्ठा करते हैं और कहते हैं येह तो नहीं मगर खुला जादू

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿۱۶﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا

क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे क्या हम ज़रूर उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले

الْاَوَّلُوْنَ ؕ﴿۱۷﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۚ﴿۱۸﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ

बाप दादा भी[18] तुम फ़रमाओ हां यूं कि ज़लील हो के तो वोह[19] तो एक ही झिड़क है[20]

तमाम हुदूद व जिहात सब का मालिक वोही है तो कोई दूसरा किस त़रह़ मुस्तह़िक़्क़े इबादत हो सकता है, लिहाज़ा वोह शरीक से मुनज़्ज़ा है। **5 :** जो ज़मीन के ब निस्बत और आस्मानों से क़रीब तर है। **6 :** या'नी हम ने आस्मान को हर एक ना फ़रमान शैत़ान से महफ़ूज़ रखा कि जब शयात़ीन आस्मान पर जाने का इरादा करें तो फ़िरिश्ते शिहाब मार कर उन को दफ़्अ़ कर दें। लिहाज़ा शयात़ीन आस्मान पर नहीं जा सकते और **7 :** और आस्मान के फ़िरिश्तों की गुफ़्तगू नहीं सुन सकते। **8 :** अंगारों की। जब वोह इस निय्यत से आस्मान की त़रफ़ जाएं। **9 :** आख़िरत में **10 :** या'नी अगर कोई शैत़ान मलाएका का कोई कलिमा कभी ले भागा **11 :** कि उसे जलाए और ईज़ा पहुंचाए। **12 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **13 :** तो जिस क़ादिरे बरह़क़ को आस्मान व ज़मीन जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ का पैदा कर देना कुछ भी मुश्किल और दुश्वार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उस पर क्या मुश्किल हो सकता है। **14 :** येह उन के ज़ो'फ़ की एक और शहादत है कि उन की पैदाइश का अस्ल माद्दा मिट्टी है जो कोई शिद्दत व कुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और बुरहान क़ाइम फ़रमाई गई है कि चिपक्ती मिट्टी उन का माद्दए पैदाइश है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और ग़ायत येह है कि मिट्टी हो जाने के बा'द उस मिट्टी से फिर दोबारा पैदाइश को वोह क्यूं ना मुम्किन जानते हैं ! माद्दा मौजूद और सानेअ़ मौजूद फिर दोबारा पैदाइश कैसे मुह़ाल हो सकती है ! **15 :** उन की तक्ज़ीब करने से कि ऐसी वाज़ेहुद्दलालह आयात व बय्यिनात के बा वुजूद वोह किस त़रह़ तक्ज़ीब करते हैं। **16 :** आप से और आप के तअ़ज्जुब से या मरने के बा'द उठने से। **17 :** मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा के **18 :** जो हम से ज़माने में मुक़द्दम हैं। कुफ़्फ़ार के नज़्दीक उन के बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना ख़ुद उन के ज़िन्दा किये जाने से ज़ियादा बईद था इस लिये उन्हों ने येह कहा। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है : **19 :** या'नी बअ़्स **20 :** एक ही होलनाक आवाज़ है नफ़्ख़ए सानिया की

www.dawateislami.net

فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا يَوْمُ

जभी वोह[21] देखने लगेंगे और कहेंगे हाए हमारी ख़राबी उन से कहा जाएगा येह इन्साफ़ का दिन है[22] येह है वोह

الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ ع ٥

फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे[23] ज़ालिमों और उन के जोड़ों को[24]

وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ الربع

और जो कुछ वोह पूजते थे अल्लाह के सिवा उन सब को हांको राहे दोज़ख़ की त़रफ़

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

और उन्हें ठहराओ[25] उन से पूछना है[26] तुम्हें क्या हुवा एक दूसरे की मदद क्यूं नहीं करते[27] बल्कि वोह आज

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّكُمْ

गरदन डाले हैं[28] और उन में एक ने दूसरे की त़रफ़ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले[29] तुम

كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾ ج وَمَا

हमारे दह्नी त़रफ़ से बहकाने आते थे[30] जवाब देंगे तुम ख़ुद ही ईमान न रखते थे[31] और

كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ج بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था[32] बल्कि तुम सरकश लोग थे तो साबित हो गई हम पर

قَوْلُ رَبِّنَا ق اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ

हमारे रब की बात[33] हमें ज़रूर चखना है[34] तो हम ने तुम्हें गुमराह किया कि हम ख़ुद गुमराह थे तो

21 : ज़िन्दा हो कर अपने अफ़्आल और पेश आने वाले अह्वाल 22 : या'नी फ़िरिश्ते कहेंगे कि येह इन्साफ़ का दिन है येह हिसाब व जज़ा का दिन है 23 : दुन्या में और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा : 24 : ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं और उन के जोड़ों से मुराद उन के शयात़ीन जो दुन्या में उन के जलीस व क़रीन रहते थे, हर एक काफ़िर अपने शैत़ान के साथ एक ही ज़न्जीर में जकड़ दिया जाएगा और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अश्बाह व अम्साल हैं या'नी हर काफ़िर अपने ही क़िस्म के कुफ़्फ़ार के साथ हांका जाएगा, बुत परस्त बुत परस्तों के साथ और आतश परस्त आतश परस्तों के साथ, وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس । 25 : सिरात़ के पास 26 : ह़दीस शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं **एक** उस की उ़म्र कि किस काम में गुज़री । **दूसरे** उस का इ़ल्म कि उस पर क्या अ़मल किया । **तीसरे** उस का माल कि कहां से कमाया कहां ख़र्च किया । **चौथे** उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया । 27 : येह उन से जहन्नम के ख़ाज़िन ब त़रीक़े तौबीख़ कहेंगे कि दुन्या में तो एक दूसरे की इमदाद पर बहुत ग़र्रा रखते थे, आज देखो कैसे आ़जिज़ हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता । 28 : आ़जिज़ व ज़लील हो कर । 29 : अपने सरदारों से जो दुन्या में बहकाते थे । 30 : या'नी बज़ोरे क़ुव्वत हमें गुमराही पर आमादा करते थे । इस पर कुफ़्फ़ार के सरदार कहेंगे और 31 : पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से ब इख़्तियारे ख़ुद ए'राज़ कर चुके थे । 32 : कि हम तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर करते 33 : जो उस ने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा । लिहाज़ा 34 : उस का अ़ज़ाब । गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी ।

www.dawateislami.net

يَوْمَىِٕذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

उस दिन[35] वोह सब के सब अ़ज़ाब में शरीक हैं[36] मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) थे[37] और कहते थे

اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ

क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शाइ़र के कहने से[38] बल्कि वोह तो ह़क़ लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

तस्दीक़ फ़रमाई[39] बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है तो तुम्हें बदला न मिलेगा मगर

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ

अपने किये का[40] मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं[41] उन के लिये वोह रोज़ी है

مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى سُرُرٍ

जो हमारे इ़ल्म में है मेवे[42] और उन की इ़ज़्ज़त होगी चैन के बाग़ों में तख़्तों पर

مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

होंगे आमने सामने[43] उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का[44] सफ़ेद रंग[45] पीने वालों

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

के लिये लज़्ज़त[46] न उस में ख़ुमार है[47] और न उस से उन का सर फिरे[48] और उन के पास हैं जो

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى

शोहरों के सिवा दूसरी त़रफ़ आंख उठा कर न देखेंगी[49] बड़ी आंखों वालियां गोया वोह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए[50] तो उन में[51] एक ने दूसरे की

35 : या'नी रोज़े क़ियामत **36 :** गुमराह भी और उन के गुमराह करने वाले सरदार भी क्यूं कि येह सब दुन्या में गुमराही में शरीक थे। **37 :** और तौह़ीद क़बूल न करते थे, शिर्क से बाज़ न आते थे **38 :** या'नी सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रमाने से। **39 :** दीन व तौह़ीद व नफ़्ये शिर्क में। **40 :** उस शिर्क और तक्ज़ीब का जो दुन्या में कर आए हो। **41 :** ईमान और इख़्लास वाले **42 :** और नफ़ीस व लज़ीज़ ने'मतें, ख़ुश ज़ाएक़ा, ख़ुश्बूदार, ख़ुश मन्ज़र। **43 :** एक दूसरे से मानूस और मसरूर। **44 :** जिस की पाकीज़ा नहरें निगाहों के सामने जारी होंगी। **45 :** दूध से भी ज़ियादा सफ़ेद **46 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जो बदबूदार और बद ज़ाएक़ा होती है और पीने वाला इस को पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है। **47 :** जिस से अ़क़्ल में ख़लल आए **48 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जिस में बहुत से फ़सादात और ऐ़ब हैं, इस से पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पेशाब में भी तक्लीफ़ हो जाती है, त़बीअ़त मालिश करती है, क़ै आती है, सर चकराता है, अ़क़्ल ठिकाने नहीं रहती। **49 :** कि उस के नज़्दीक उस का शोहर ही साह़िबे हुस्न और प्यारा है। **50 :** गर्दो ग़ुबार से पाक साफ़ दिलकश रंग। **51 :** या'नी अहले जन्नत में से।

www.dawateislami.net

بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾ يَّقُوْلُ

तरफ़ मुंह किया पूछते हुए[52] उन में से कहने वाला बोला मेरा एक हम नशीन था[53] मुझ से कहा करता

اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا

क्या तुम इसे सच मानते हो[54] क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें

لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ

जज़ा सज़ा दी जाएगी[55] कहा क्या तुम झांक कर देखोगे[56] फिर झांका तो उसे बीच भड़क्ती

الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ

आग में देखा[57] कहा ख़ुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे[58] और मेरा रब फ़ज़्ल न करे[59]

لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى

तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता[60] तो क्या हमें मरना नहीं मगर हमारी पहली मौत[61]

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا

और हम पर अ़ज़ाब न होगा[62] बेशक येही बड़ी काम्याबी है ऐसी ही बात के लिये

فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا

कामियों को काम करना चाहिये तो येह मेहमानी भली[63] या थोहड़ का पेड़[64] बेशक हम ने

جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾

उसे ज़ालिमों की जांच किया है[65] बेशक वोह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है[66]

52 : कि दुन्या में क्या ह़ालात व वाक़िआ़त पेश आए ? **53 :** दुन्या में। जो मरने के बा'द उठने का मुन्किर था और इस की निस्बत तन्ज़ के त़रीक़े पर **54 :** या'नी मरने के बा'द उठने को **55 :** और हम से ह़िसाब लिया जाएगा। येह बयान कर के उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से **56 :** कि मेरे उस हम नशीन का जहन्नम में क्या ह़ाल है ? **57 :** कि अ़ज़ाब के अन्दर गिरिफ़्तार है तो उस जन्नती ने उस से **58 :** राहे रास्त से बहका कर **59 :** और अपने रह़मत व करम से मुझे तेरे इग़्वा से महफ़ूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ न देता **60 :** तेरे साथ जहन्नम में। और जब मौत ज़ब्ह़ कर दी जाएगी तो अहले जन्नत फ़िरिश्तों से कहेंगे **: 61 :** वोही जो दुन्या में हो चुकी **62 :** फ़िरिश्ते कहेंगे **:** नहीं। और अहले जन्नत का येह दरयाफ़्त करना अल्लाह तआ़ला की रह़मत के साथ तलज़्ज़ुज़ और दाइमी ह़यात की ने'मत और अ़ज़ाब से मामून होने के एह़सान पर उस की ने'मत का ज़िक्र करने के लिये है और इस ज़िक्र से उन्हें सुरूर ह़ासिल होगा। **63 :** या'नी जन्नती ने'मतें और लज़्ज़तें और वहां के नफ़ीस और लतीफ़ मआकिल व मशारिब और दाइमी ऐश और बे निहायत राह़तो सुरूर **64 :** निहायत तल्ख़, इन्तिहा का बदबूदार, ह़द दरजे का बद मज़ा, सख़्त ना गवार जिस से दोज़ख़ियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को इस के खाने पर मजबूर किया जाएगा। **65 :** कि दुन्या में काफ़िर इस का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा। **66 :** और उस की शाख़ें जहन्नम के दरकात में पहुंचती हैं।

www.dawateislami.net

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ

उस का शिगूफ़ा जैसे देवों के सर[67] फिर बेशक वोह उस में से खाएंगे[68] फिर उस से

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ

पेट भरेंगे फिर बेशक उन के लिये उस पर खौलते पानी की मिलोनी (मिलावट) है[69] फिर उन की बाज़गश्त (वापसी)

لَاِلَى الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ

ज़रूर भड़क्ती आग की त़रफ़ है[70] बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा गुमराह पाए तो वोह उन्हीं के निशाने क़दम पर

يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

दौड़े जाते हैं[71] और बेशक उन से पहले बहुत से अगले गुमराह हुए[72] और बेशक हम ने

فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ

उन में डर सुनाने वाले भेजे[73] तो देखो डराए गयों का कैसा अन्जाम हुवा[74] मगर अल्लाह

اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنٰهُ ع ٢ ٥٣ ٦

के चुने हुए बन्दे[75] और बेशक हमें नूह़ ने पुकारा[76] तो हम क्या ही अच्छे क़बूल फ़रमाने वाले[77] और हम ने उसे

وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا

और उस के घर वालों को बड़ी तक्लीफ़ से नजात दी और हम ने उसी की औलाद बाक़ी रखी[78] और हम ने

عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी[79] नूह़ पर सलाम हो जहान वालों में[80] बेशक हम ऐसा ही

67 : या'नी निहायत बद हैअत और क़बीहुल मन्ज़र। **68 :** शिद्दत की भूक से मजबूर हो कर **69 :** या'नी जहन्नमी थोहड़ से उन के पेट भरेंगे वोह जलता होगा पेटों को जलाएगा उस की सोज़िश से प्यास का ग़लबा होगा और मुद्दत तक तो प्यास की तक्लीफ़ में रखे जाएंगे, फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस की गरमी और सोज़िश उस थोहड़ की गरमी और जलन से मिल कर और तक्लीफ़ व बेचैनी बढ़ाएगी। **70 :** क्यूं कि ज़क़्क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उन को अपने दरकात से दूसरे दरकात में ले जाया जाएगा, इस के बा'द फिर अपने दरकात की त़रफ़ लौटाए जाएंगे। इस के बा'द उन के मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब होने की इल्लत इर्शाद फ़रमाई जाती है **71 :** और गुमराही में उन का इत्तिबाअ़ करते हैं और ह़क़ के दलाइले वाज़ेह़ा से आंखें बन्द कर लेते हैं। **72 :** इसी वज्ह से कि उन्हों ने अपने बाप दादा की ग़लत़ राह न छोड़ी और ह़ुज्जत व दलील से फ़ाएदा न उठाया। **73 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जिन्हों ने उन को गुमराही और बद अ़मली के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ दिलाया। **74 :** कि वोह अ़ज़ाब से हलाक किये गए। **75 :** ईमानदार जिन्हों ने अपने इख़्लास के सबब नजात पाई। **76 :** और हम से अपनी क़ौम के अ़ज़ाब व हलाक की दरख़्वास्त की। **77 :** कि हम ने उन की दुआ क़बूल की और उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की और उन से पूरा इन्तिक़ाम लिया कि उन्हें ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। **78 :** तो अब दुन्या में जितने इन्सान हैं सब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के बा'द उन के हमराहियों में जिस क़दर मर्द व औ़रत थे सभी मर गए सिवाए आप की औलाद और उन की औ़रतों के, उन्हीं से दुन्या की नस्लें चलीं,

www.dawateislami.net

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَ اِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ

وقف لازم

डुबो दिया[81] और बेशक उसी के गुरौह से इब्राहीम है[82] जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुवा ग़ैर से

سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ

सलामत दिल ले कर[83] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया[84] तुम क्या पूजते हो क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा

اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي

और ख़ुदा चाहते हो तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आ़लमीन पर[85] फिर उस ने एक निगाह सितारों

النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى

को देखा[86] फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूं[87] तो वोह उस पर पीठ दे कर फिर गए[88] फिर उन के ख़ुदाओं की त़रफ़

اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते[89] तुम्हें क्या हुवा कि नहीं बोलते[90] तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें

अ़रब और फ़ारस और रूम आप के फ़रज़न्द साम की औलाद से हैं और सूडान के लोग आप के बेटे हाम की नस्ल से और तुर्क और याजूज माजूज वग़ैरा आप के साहिब ज़ादे याफ़िस की औलाद से। **79 :** या'नी उन के बा'द वाले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन की उम्मतों में हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्रे जमील बाक़ी रखा। **80 :** या'नी मलाएका और जिन्नो इन्स सब उन पर क़ियामत तक सलाम भेजा करें। **81 :** या'नी हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के काफ़िरों को। **82 :** या'नी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के दीनो मिल्लत और उन्ही के त़रीक़ व सुन्नत पर हैं। हज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान दो हज़ार छ[6] सो चालीस बरस का ज़मानी फ़र्क़ है और दोनों हज़रात के दरमियान जो अ़हद गुज़रा उस में सिर्फ़ दो नबी हुए : हज़रते हूद व हज़रते सालेह़ عَلَيْهِمَا السَّلَام। **83 :** या'नी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया। **84 :** ब त़रीक़े तौबीख़ **85 :** कि जब तुम उस के सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वोह तुम्हें बे अ़ज़ाब छोड़ देगा ? बा वुजूदे कि तुम जानते हो कि वोही मुन्इमे ह़क़ीक़ी मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है। क़ौम ने कहा कि कल को हमारी ईद है, जंगल में मेला लगेगा, हम नफ़ीस खाने पका कर बुतों के पास रख जाएंगे और मेले से वापस हो कर तबर्रुक के तौ़र पर उन को खाएंगे, आप भी हमारे साथ चलें और मज्मअ़ और मेले की रौनक़ देखें, वहां से वापस हो कर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उन का बनाव सिंगार देखें, येह तमाशा देखने के बा'द हम समझते हैं कि आप बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे। **86 :** जैसे कि सितारा शनास नुजूम के माहिर सितारों के मवाक़ेए़ इत्तिसालात व इन्सिराफ़ात को देखा करते हैं। **87 :** क़ौम नुजूम की बहुत मो'तक़िद थी, वोह समझी कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सितारों से अपने बीमार होने का ह़ाल मा'लूम कर लिया, अब येह किसी मुतअ़द्दी मरज़ में मुब्तला होने वाले हैं, मुतअ़द्दी मरज़ से वोह लोग बहुत डरते थे। **मस्अला :** इ़ल्मे नुजूम ह़क़ है और सीखने में मश्ग़ूल होना मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** शरअ़न कोई मरज़ मुतअ़द्दी नहीं होता या'नी एक शख़्स का मरज़ बि ऐनिही दूसरे में नहीं पहुंच जाता, माद्दों के फ़साद और हवा वग़ैरा की सम्तों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक त़रह़ के मरज़ हो सकते हैं, लेकिन हुदूस मरज़ का हर एक में जुदागाना है, किसी का मरज़ किसी दूसरे में नहीं पहुंचता। **88 :** अपनी ईद की त़रफ़ और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को छोड़ गए, आप बुतख़ाने में आए। **89 :** या'नी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है, बुतों ने इस का कुछ जवाब न दिया और वोह जवाब ही क्या देते तो आप ने फ़रमाया : **90 :** इस पर भी बुतों की त़रफ़ से कुछ जवाब न हुवा, वोह बेजान पथ्थर थे जवाब क्या देते।

www.dawateislami.net

ضَرْبًۢا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْۤا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا

दहने हाथ से मारने लगा[91] तो काफ़िर उस की त़रफ़ जल्दी करते आए[92] फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों

تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

को पूजते हो और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को[93] बोले इस के लिये एक इ़मारत चुनो[94]

فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَ

फिर इसे भड़क्ती आग में डाल दो तो उन्हों ने उस पर दाउं चलना (फ़रेब करना) चाहा हम ने उन्हें नीचा दिखाया[95] और

قَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

कहा मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं[96] अब वोह मुझे राह देगा[97] इलाही मुझे लाइक़ औलाद दे

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْۤ اَرٰى فِى

तो हम ने उसे ख़ुश ख़बरी सुनाई एक अ़क़्ल मन्द लड़के की फिर जब वोह उस के साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब

الْمَنَامِ اَنِّىْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫

देखा कि मैं तुझे ज़ब्ह़ करता हूं[98] अब तू देख तेरी क्या राय है[99] कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है

سَتَجِدُنِىْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ ۚ

ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त का ह़ाल न पूछ[100]

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ۙ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى

और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई[101] हम ऐसा ही सिला देते हैं

91 : और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने बुतों को मार मार कर पारा पारा कर दिया। जब काफ़िरों को इस की ख़बर पहुंची **92 :** और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो **93 :** तो पूजने का मुस्तह़िक़ वोह है न कि बुत। इस पर वोह ह़ैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया। **94 :** पथ्थर की तीस गज़ लम्बी बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी, फिर उस को लकड़ियों से भर दो और उन में आग लगा दो, यहां तक कि आग ज़ोर पकड़े। **95 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को उस आग में सलामत रख कर। चुनान्चे आग से आप सलामत बरआमद हुए **96 :** इस दारुल कुफ़्र से हिजरत कर के, जहां जाने का मेरा रब हुक्म दे **97 :** चुनान्चे ब हुक्मे इलाही आप सर ज़मीने शाम में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आप ने अपने रब से दुआ़ की **: 98 :** या'नी तेरे ज़ब्ह़ का इन्तिज़ाम कर रहा हूं और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़्वाब ह़क़ होती है और उन के अफ़्आ़ल ब हुक्मे इलाही हुवा करते हैं। **99 :** येह आप ने इस लिये कहा था कि फ़रज़न्द को ज़ब्ह़ से वह़शत न हो और इत़ाअ़ते अम्रे इलाही के लिये वोह ब रग़बत तय्यार हों। चुनान्चे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द ने रिज़ाए इलाही पर फ़िदा होने का कमाले शौक़ से इज़्हार किया। **100 :** येह वाक़िआ़ मिना में वाक़ेअ़ हुवा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई, क़ुदरते इलाही कि छुरी ने कुछ भी काम न किया। **101 :** इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी कमाल को पहुंचा दी, फ़रज़न्द को ज़ब्ह़ के लिये बे दरेग़ पेश कर दिया, बस अब इतना काफ़ी है।

www.dawateislami.net

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ

नेकों को बेशक येह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के सदक़े में दे कर

عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ

उसे बचा लिया[102] और हम ने पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो इब्राहीम पर[103] हम ऐसा ही

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और हम ने उसे ख़ुश ख़बरी दी

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ

इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में[104] और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्हाक़ पर[105] और उन की

ع ٣ ٣٩ ٧ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَ

औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला[106] और कोई अपनी जान पर सरीह़ ज़ुल्म करने वाला[107] और बेशक हम ने मूसा और हारून

هٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ

पर एह़सान फ़रमाया[108] और उन्हें और उन की क़ौम[109] को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी[110] और उन की हम ने मदद फ़रमाई[111]

فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا

तो वोही ग़ालिब हुए[112] और हम ने उन दोनों को रोशन किताब अ़ता फ़रमाई[113] और उन को

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى

सीधी राह दिखाई और पिछलों में उन की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो

مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ

मूसा और हारून पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह दोनों

102 : इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल हैं या ह़ज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِمَا السَّلَام लेकिन दलाइल की क़ुव्वत येही बताती है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल ही हैं عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िदये में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिस को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ब्ह़ फ़रमाया। **103 :** हमारी त़रफ़ से **104 :** वाक़िअ़ए ज़ब्ह़ के बा'द ह़ज़रते इस्हाक़ की ख़ुश ख़बरी इस की दलील है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं। **105 :** हर त़रह़ की बरकत, दीनी भी और दुन्यवी भी और ज़ाहिरी बरकत येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में कसरत की और ह़ज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से बहुत से अम्बिया किये, ह़ज़रते या'क़ूब से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक। **106 :** या'नी मोमिन **107 :** या'नी काफ़िर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी बाप के साह़िबे फ़ज़ाइले कसीरा होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं, येह अल्लाह तआ़ला की शानें हैं कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक, न औलाद का बद होना आबा के लिये ऐ़ब हो न आबा की बदी औलाद के लिये। **108 :** कि उन्हें नुबुव्वत व रिसालत इ़नायत फ़रमाई। **109 :** या'नी बनी इसराईल **110 :** कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के मज़ालिम से रिहाई दी। **111 :** क़िब्ति़यों के मुक़ाबिल **112 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर। **113 :** जिस का बयान बलीग़

www.dawateislami.net

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِذْ قَالَ

हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है[114] जब उस ने

لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٣٤﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٣٥﴾

अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं[115] क्या बअ़ल को पूजते हो[116] और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का[117] फिर उन्हों ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आएंगे[118]

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٣٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٣٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤى

मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे[119] और हम ने पिछलों में उस की सना बाक़ी रखी सलाम हो

اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا

इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ

ईमान बन्दों में है और बेशक लूत पैग़म्बरों में है जब कि हम ने उसे और उस के सब घर वालों

اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَ

को नजात बख़्शी मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई[120] फिर दूसरों को हम ने हलाक फ़रमा दिया[121] और

اِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَ ع ٢ ٢٥ ٨

बेशक तुम[122] उन पर गुज़रते हो सुब्ह को और रात में[123] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[124] और

اِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾

बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है जब कि भरी कश्ती की त़रफ़ निकल गया[125]

और वोह हुदूद व अह़काम वग़ैरा की जामेअ़। इस किताब से मुराद तौरैत शरीफ़ है। **114 :** जो बअ़लबक्क और उस के नवाह़ के लोगों की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए। **115 :** या'नी क्या तुम्हें अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं। **116 :** "**बअ़ल**" उन के बुत का नाम था जो सोने का था, उस की लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे, उस की बहुत ता'ज़ीम करते थे, जिस मक़ाम में वोह था उस जगह का नाम "बक्क" था इसी से बअ़लबक्क मुरक्कब हुवा, येह बिलादे शाम में है। **117 :** उस की इ़बादत तर्क करते हो। **118 :** जहन्नम में **119 :** या'नी उस क़ौम में से अल्लाह तआ़ला के बरगुज़ीदा बन्दे जो ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए, उन्हों ने अ़ज़ाब से नजात पाई। **120 :** अ़ज़ाब के अन्दर। **121 :** या'नी ह़ज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के कुफ़्फ़ार को। **122 :** ऐ अहले मक्का ! **123 :** या'नी अपने सफ़रों में रोज़ो शब तुम उन के आसार व मनाज़िल पर गुज़रते हो। **124 :** कि उन से इ़ब्रत ह़ासिल करो। **125 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और वह्ब का क़ौल है कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से अ़ज़ाब का वा'दा किया था, इस में ताख़ीर हुई तो आप उन से छुप कर निकल गए और आप ने दरियाई सफ़र का क़स्द किया, कश्ती पर सुवार हुए, दरिया के दरमियान में कश्ती ठहर गई और उस के ठहरने का कोई सबबे ज़ाहिर मौजूद न था, मल्लाहों ने कहा इस कश्ती में

www.dawateislami.net

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْ

तो क़ुरआ़ डाला तो धकेले हुओं में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था[126] तो अगर

لَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ النصف

वोह तस्बीह़ करने वाला न होता[127] ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे[128]

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

फिर हम ने उसे[129] मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था[130] और हम ने उस पर[131] कद्दू का पेड़ उगाया[132]

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى

और हम ने उसे[133] लाख आदमियों की त़रफ़ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए[134] तो हम ने उन्हें एक वक़्त

حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا

तक बरत्ने दिया[135] तो उन से पूछो क्या तुम्हारे रब के लिये बेटियां हैं[136] और उन के बेटे[137] या हम ने मलाएका

الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

को औ़रतें पैदा किया और वोह ह़ाज़िर थे[138] सुनते हो बेशक वोह अपने बोहतान से कहते हैं

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا

कि अल्लाह की औलाद है और बेशक ज़रूर वोह झूटे हैं क्या उस ने बेटियां पसन्द कीं बेटे छोड़ कर तुम्हें

अपने मौला से भागा हुवा कोई ग़ुलाम है, क़ुरआ़ डालने से ज़ाहिर हो जाएगा, क़ुरआ़ डाला गया तो आप ही के नाम निकला, तो आप ने फ़रमाया : मैं ही वोह ग़ुलाम हूं और आप पानी में डाल दिये गए क्यूं कि दस्तूर येही था कि जब तक भागा हुवा ग़ुलाम दरिया में ग़र्क़ न कर दिया जाए उस वक़्त तक कश्ती चलती न थी। **126 :** कि क्यूं निकलने में जल्दी की और क़ौम से जुदा होने में अम्रे इलाही का इन्तिज़ार न किया **127 :** या'नी ज़िक्रे इलाही की कसरत करने वाला और मछली के पेट में "لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ" पढ़ने वाला **128 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक। **129 :** मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बा'द **130 :** या'नी मछली के पेट में रहने के बाइस आप ऐसे ज़ईफ़ नह़ीफ़ और नाज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है, जिस्म की ख़ाल नर्म हो गई और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था **131 :** साया करने और मख्खियों से महफ़ूज़ रखने के लिये **132 :** कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है, मगर येह आप का मो'जिज़ा था कि येह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की त़रह़ शाख़ रखता था और उस के बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन ह़ज़रत के दहने मुबारक में दे कर आप को सुब्ह़ो शाम दूध पिला जाती, यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी ख़ाल मज़बूत हुई और अपने मौक़अ़ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई। **133 :** पहले की त़रह़ सर ज़मीने मौसिल में क़ौमे नैनवा के **134 :** आसारे अ़ज़ाब देख कर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रुकूअ़ में गुज़र चुका है और इस वाक़िए़ का बयान सूरए अम्बियाअ के छटे रुकूअ़ में भी आ चुका है) **135 :** या'नी उन की आख़िरी उ़म्र तक उन्हें आसाइश के साथ रखा। इस वाक़िए़ के बयान फ़रमाने के बा'द अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि आप कुफ़्फ़ारे मक्का से इन्कारे बअ़्स की वज्ह दरयाफ़्त कीजिये। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : **136 :** जैसा कि जुहैना और बनी सलमा वग़ैरा कुफ़्फ़ार का ए'तिक़ाद है कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं **137 :** या'नी अपने लिये तो बेटियां गवारा नहीं करते बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को ख़ुदा की त़रफ़ निस्बत करते हैं। **138 :** देख रहे थे, क्यूं ऐसी बेहूदा बात कहते हैं।

www.dawateislami.net

لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

क्या है कैसा हुक्म लगाते हो[139] तो क्या ध्यान नहीं करते[140] या तुम्हारे लिये कोई

مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ

खुली सनद है तो अपनी किताब लाओ[141] अगर सच्चे हो और उस में और जिन्नों में

الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

रिश्ता ठहराया[142] और बेशक जिन्नों को मा'लूम है कि वोह[143] ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे[144] पाकी है अल्लाह को

عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾

उन बातों से कि येह बताते हैं मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे[145] तो तुम और जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[146]

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ

तुम उस के ख़िलाफ़ किसी को बहकाने वाले नहीं[147] मगर उसे जो भड़क्ती आग में जाने वाला है[148] और फ़िरिश्ते कहते हैं

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّ اِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ

हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है[149] और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर हैं और बेशक हम

الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ

उस की तस्बीह़ करने वाले हैं और बेशक वोह कहते थे[150] अगर हमारे पास अगलों की कोई

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ

नसीह़त होती[151] तो ज़रूर हम अल्लाह के चुने बन्दे होते[152] तो उस के मुन्किर हुए तो अ़न्क़रीब

يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ

जान लेंगे[153] और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये कि बेशक उन्हीं

139 : फ़ासिद व बातिल 140 : और इतना नहीं समझते कि अल्लाह तआ़ला औलाद से पाक और मुनज़्ज़ा है। 141 : जिस में येह सनद हो 142 : जैसा कि बा'ज़ मुश्रिकीन ने कहा था कि अल्लाह ने जिन्नों में शादी की इस से फ़िरिश्ते पैदा हुए (مَعَاذَاللّٰه) कैसे अ़ज़ीम कुफ़्र के मुर्तकिब हुए। 143 : या'नी इस बेहूदा बात के कहने वाले 144 : जहन्नम में अ़ज़ाब के लिये। 145 : ईमानदार। अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से जो येह कुफ़्फ़ारे ना बकार कहते हैं। 146 : या'नी तुम्हारे बुत सब के सब वोह और 147 : गुमराह नहीं कर सकते 148 : जिस की क़िस्मत ही में येह है कि वोह अपने किरदारे बद से मुस्तहिक़्क़े जहन्नम हो। 149 : जिस में अपने रब की इबादत करता है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि आस्मानों में बालिश्त भर भी जगह ऐसी नहीं है जिस में कोई फ़िरिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह़ न करता हो। 150 : या'नी मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले कहा करते थे कि 151 : कोई किताब मिलती 152 : उस की इत़ाअ़त करते और इख़्लास के साथ इबादत बजा लाते। फिर जब तमाम किताबों से अफ़्ज़ल व अशरफ़ मो'जिज़ किताब उन्हें मिली या'नी क़ुरआने मजीद नाज़िल हुवा 153 : अपने कुफ़्र का अन्जाम।

www.dawateislami.net

الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

की मदद होगी और बेशक हमारा ही लश्कर[154] ग़ालिब आएगा तो एक वक़्त तक तुम उन से

حِیْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّ اَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ یُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾ اَفَبِعَذَابِنَا یَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

मुंह फेर लो[155] और उन्हें देखते रहो कि अन्क़रीब वोह देखेंगे[156] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِیْنَ ﴿١٧٧﴾ وَ تَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى

फिर जब उतरेगा उन के आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुब्ह़ होगी और एक वक़्त तक उन से

حِیْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّ اَبْصِرْ فَسَوْفَ یُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो कि वोह अन्क़रीब देखेंगे पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को

یَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿١٨١﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٨٢﴾ ع

उन की बातों से[157] और सलाम है पैग़म्बरों पर[158] और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहां का रब है

اٰیَاتُهَا ٨٨ | سُوْرَةُ صٓ ٣٨ مَكِّیَّةٌ ٣٨ | رُكُوْعَاتُهَا ٥

सूरए صٓ मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صٓ وَ الْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ﴿٢﴾

इस नामवर क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में हैं[3]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ لَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَ

हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपाईं[4] तो अब वोह पुकारें[5] और छूटने का वक़्त न था[6] और

154 : या'नी अहले ईमान। 155 : जब तक कि तुम्हें उन के साथ क़िताल करने का हुक्म दिया जाए। 156 : त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत में, जब येह आयत नाज़िल हुई तो कुफ़्फ़ार ने बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहा कि येह अ़ज़ाब कब नाज़िल होगा ? इस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। 157 : जो काफ़िर उस की शान में कहते हैं और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। 158 : जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौह़ीद और एह़कामे शर्अ़ पहुंचाए। इन्सानी मरातिब में सब से आ'ला मर्तबा येह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तक्मील करे। येह शान अम्बिया की है عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो हर एक पर उन ह़ज़रात की इत्तिबाअ़ और उन की इक़्तिदा लाज़िम है।
1 : "सूरए صٓ" इस का नाम "सूरए दावूद" भी है, येह सूरत मक्की है, इस में पांच रुकूअ़, अठासी आयतें और सात सो बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सड़सठ ह़र्फ़ हैं। 2 : जो शरफ़ वाला है कि येह कलामे मो'जिज़ है। 3 : और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़दावत रखते हैं इस लिये ह़क़ का ए'तिराफ़ नहीं करते। 4 : या'नी आप की क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं इसी इस्तिक्बार और अम्बिया की मुख़ालफ़त के बाइस 5 : या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त उन्हों ने फ़रियाद की। 6 : कि ख़लास पा सकते, उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी,

www.dawateislami.net